1

लोक व जनजातीय कला का परिचय

भारतीय लोककला मूलत: प्राचीन काल की है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रही है। कलाकारों ने महाकाव्यों, मिथकों और किंवदंतियों, देवी-देवताओं की कहानियों आदि से कला के विषयों को चुना। पारंपरिक कलाकारों ने स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री, यानी सब्जियाँ, फल, मिट्टी, पत्थर आदि से तैयार प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया। उन्होंने अपनी छत, दीवार, आंगन, कपड़े और विभिन्न प्रकार की वस्तुओं पर चित्रकारी की।

भारत में लोककला की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक कला से होती है और हमारे पूर्वज आज से दस लाख से भी अधिक सालों पहले इस धरती पर आए। एक दिन उन्होंने औजारों का आविष्कार किया। लोगों को धीरे-धीरे पता चला कि कुछ पत्थरों या डंडों के आकार कुछ कार्यों के लिए अधिक उपयुक्त थे, और उन्होंने उन्हें भविष्य के उपयोग के लिए अलग रख दिया। इसके अलावा, उन्होंने आकार को सुधारने के लिए औजारों को तेज़ करना शुरू कर दिया। यह पहला शिल्प था। अध्ययनों से पता चला है कि गुफाओं में रहने वालों और बच्चों की विकास प्रक्रिया के बीच समानता थी। जब कोई बच्चा चित्र बनाता है तो वह अपने परिवेश के साथ-साथ अपनी भावनाओं को भी दर्शाता है। इसी तरह गुफा-कला ने भी अपने परिवेश के आलंकारिक और प्रतीकात्मक चित्रों के माध्यम से भावनाओं को प्रतिबिंबित किया। आदिम लोगों का जीवन सूर्य, चंद्रमा और बारिश जैसी प्रकृति की शक्ति से संचालित होता था जिसे समझना मुश्किल था। उन्होंने महसूस किया कि प्रकृति की इन ताकतों को दर्शाने वाली आकृतियों और प्रतीकों को स्थापित और चित्रित किया या उकेरा जाना चाहिए। धीरे-धीरे यह मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

प्रिय शिक्षार्थी, इस पाठ में आप भारतीय कला के विभिन्न लोक और आदिवासी रूपों के बारे में जानेंगे। मध्य प्रदेश में भीमबेटका के प्रागैतिहासिक चित्रों से आप सीखेंगे कि पश्चिम बंगाल में जादुपट की आदिवासी कला और बिहार में मधुबनी की लोककला ने आगे चलकर कैसे आकार ग्रहण किया।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप :

- लोक और जनजातीय कला की संक्षिप्त पृष्ठभूमि का वर्णन कर सकेंगे;
- भारतीय कला की प्रागैतिहासिक चित्रकला की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारतीय कला के विभिन्न प्रागैतिहासिक चित्रों का वर्णन कर सकेंगे;
- भारतीय कला कब और कैसे लोक और जनजातीय कला में परिवर्तित हुई, इसका उल्लेख कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार की लोक और जनजातीय कलाओं का विस्तार से वर्णन कर सकेंगे।

1.1 भीमबेटका पेंटिंग

आइए जानें शैल चित्रण (रॉक पेंटिंग) के बारे में

शीर्षक : भीमबेटका

राज्य : मध्य प्रदेश

प्रकार : शैल चित्रण (रॉक पेंटिंग)

अवधि : 3000 ई.पू. (पूर्व-ऐतिहासिक युग)

कलाकार : अज्ञात

संक्षिप्त परिचय

आप जानते हैं कि लोक और जनजातीय कला की जड़ें प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में निहित हैं। भारत के शैल चित्रों के अध्ययन से लोक और जनजातीय चित्रकला को समझने और उसकी सराहना करने में मदद मिलेगी।

भारत के प्रागैतिहासिक शैल चित्रों को अब मात्रात्मक और गुणात्मक रूप से महत्वपूर्ण कार्यों के रूप में माना जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप में शिकारियों और खाद्य संग्रहकर्ताओं का निवास था। बाद में पुरातात्विक खोजों ने साबित कर दिया कि शिकारी और भोजन-संग्रहकर्ता सबसे पहले भारतीय धरती पर मौजूद थे। इसके अलावा, उनकी उपस्थिति न केवल पत्थर के औजारों और अन्य उपकरणों से, बल्कि एक निश्चित तिथि के बाद, शैल चित्रण और शैल उत्कीर्णन द्वारा भी प्रमाणित होती है। साथ ही, प्रागैतिहासिक भारतीय कला की प्रारंभिक अभिव्यक्ति में प्रत्येक चित्र मूल्यवान है।

सामान्य विवरण

हमारे देश में लगभग सात सौ ऐसे स्थल हैं और प्रत्येक स्थल में एक से तीस गुफाएँ हैं, जहाँ लोग रहते थे। मध्य प्रदेश का 'भीमबेटका' उनमें से एक है। आप में से कुछ लोगों ने इसे देखा होगा। चित्रकला के लिए रंगों की शैली, सामग्री और उपयोग इसके प्रागैतिहासिक चरित्र को दर्शाते हैं। यहाँ दिखाये गये चित्र (चित्र 1.1) में जंगल के जानवर हैं और पुरुष अपने आदिम शिकार के औजारों के साथ हैं। वे पत्थर, कुल्हाड़ी, लाठी, मुद्गर, भाला, धनुष और तीर के माध्यम से

शिकार पर वार करते हैं। हम पुरुषों और जंगली जानवरों के बीच तेज़ी से टकराव की तस्वीरें पाते हैं। यानी शिकार के दृश्य और साथ ही धर्म के प्रारंभिक संकेत विभिन्न आकृतियों में उपलब्ध हैं।

चित्र 1.1: भीमबेटका

पाठगत प्रश्न 1.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भीमबेटका पेंटिंग किस प्रकार की पेंटिंग है–
   (i) शैल पेंटिंग (ii) क्ले पेंटिंग
   (iii) फड़ पेंटिंग (iv) मिथिला पेंटिंग
2. भीमबेटका शैल चित्र किस राज्य में मिलते हैं–
   (i) उत्तर प्रदेश (ii) मध्य प्रदेश
   (iii) बिहार (iv) बंगाल

1.2 जोगीमारा पेंटिंग

शिक्षार्थियो, अब हम जोगीमारा फ्रेस्को पेंटिंग (दृश्यकला चित्र) के बारे में जानेंगे।

शीर्षक : जोगीमारा
राज्य : छत्तीसगढ़
प्रकार : फ्रेस्को पेंटिंग
अवधि : पहली शताब्दी ई.पू.
कलाकार : अज्ञात

संक्षिप्त परिचय

आप जानते हैं कि भारत में प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला ने झोब, आमरी, नंदरा, नल, शाही टंप और हड़प्पा-मोहनजोदड़ो के माध्यम से आद्य-ऐतिहासिक युग में प्रवेश किया था। छत्तीसगढ़ के सरगुजा के रामगढ़ पहाड़ी की जोगीमारा की गुफा में कुछ चित्रों की खोज की गई थी। विशेषज्ञों ने सुझाव दिया है कि इन चित्रों को ऐतिहासिक युग के चित्रों के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। ये हैं- 'फ्रेस्को पेंटिंग्स'। यहाँ पत्थर या दीवार पर चूने और रेत या अन्य सामग्री का प्लास्टर बिछाया जाता है। उस गीले प्लास्टर पर कलाकार चित्र बनाते हैं और सूखने के बाद उसमें रंग भरते हैं। फिर, अंत में, यह एक स्थायी पेंटिंग बन जाती है।

चित्र 1.2: जोगीमार

सामान्य विवरण

इस तस्वीर में आप जानवर और इंसान दोनों की आकृतियाँ देख सकते हैं। वे लाल रंग में रंगे हुए हैं, सीमाओं को काले रंग से चिह्नित किया गया है, और आधार सफ़ेद है। कभी-कभी पीले रंग का प्रयोग होता था, लेकिन नीले रंग का प्रयोग उनके द्वारा कम ही किया गया है। आम तौर पर ये चित्र एक बिंदु से वृत्त में बनाए जाते थे, और वृत्त ज्यामितीय आकृतियों से भरे होते थे। जोगीमारा में आप देख सकते हैं कि अधिकांश चित्रों का आधार धार्मिक है। धार्मिक एवं अलौकिक भावनाएँ उस समय अधिक महत्वपूर्ण थी। चित्रांकन की शैली निराली थी, लेकिन प्रागैतिहासिक काल के शैलचित्रों का प्रभाव था। प्रागैतिहासिक शैल पेंटिंग से शुरू हुई विरासत जोगीमारा के माध्यम से आदिवासियों और लोकजन की कला को प्रभावित करती रही।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. जोगीमारा फ्रेस्को पेंटिंग किस राज्य में मिलती है?
2. इस पेंटिंग का समयविधि क्या है?
3. जोगीमारा पेंटिंग में आमतौर पर किन रंगों का प्रयोग किया जाता था?
4. जोगीमारा पेंटिंग में किस रंग का प्रयोग कम होता था?

1.3 लोककला का वर्गीकरण

इस खंड में आप कला के वर्गीकरण के बारे में जानेंगे। प्रागैतिहासिक शिकारी और खाद्य संग्रहकर्ताओं ने धीरे-धीरे कृषि और खेती को अपनी जीवनशैली में शामिल कर लिया। बचाव और सुरक्षा उनके लिए महत्वपूर्ण हो गई। गुफावासी सुरक्षा के लिए बस्ती की तरह एक समूह में रहने लगे। दिन-प्रतिदिन क्षेत्र विस्तार हो रहा था और लोगों ने अन्य पड़ोसी समूहों के बीच अपने विचारों और सुझावों का आदान-प्रदान शुरू किया।

समाजों के असमान विकास के कारण कला दो शाखाओं में विभक्त हो गई। कुछ शिकारी और खाद्य संग्रहकर्ता कृषि और खेती में लगे हुए थे। इसके विपरीत, उनमें से कुछ शिकारी और खाद्य संग्रहकर्ता बने रहे। जीवनशैली और अन्य कारकों का यह असमान विकास उनकी कला में परिलक्षित होता रहा। इस प्रकार, गुफा कला दो अलग-अलग खंडों में परिवर्तित हो गई–

1. लोककला (वे लोग जिन्होंने कृषि को चुना था)।
2. जनजातीय कला (वे लोग जो शिकारी और भोजन संग्रहकर्ता बने रहे)।

1.4 जनजातीय चित्रकला

अब हम पश्चिम बंगाल की आदिवासी कला के बारे में जानेंगे–

शीर्षक : जादूपट पेंटिंग
राज्य : पश्चिम बंगाल
प्रकार : जनजातीय कला
अवधि : समकालीन
कलाकार : अज्ञात

संक्षिप्त परिचय

लोक और आदिवासी दोनों प्रकार के कलाकार अपनी कला में अपनी सांस्कृतिक पहचान स्थापित करना चाहते थे। उनकी कला मुख्य रूप से कर्मकांड से जुड़ी और धार्मिक थी। जो कहानियाँ वे सुनते थे, उन्हें व्यक्त करने के लिए वे उन्हें चित्रित करना पसंद करते थे। पेंटिंग एक पट्टचित्र के रूप में तथा उभरकर सामने आयी।

यह जादूपट पश्चिम बंगाल के संथालों की एक विशिष्ट पेंटिंग है। यह समुदाय भारत की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। यह बड़े पैमाने पर पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, झारखंड और छत्तीसगढ़ में निवास करती है। इन चित्रकारों को 'जादुपटुआ' के नाम से जाना जाता है।

चित्र 1.3: जादूपत

सामान्य विवरण

इस पेंटिंग में चित्र सरल हैं और एक ही सपाट सतह पर चित्रित किए गए हैं। राधा और कृष्ण के दिव्य प्रेम की कहानियों को क्षैतिज पट्टियों द्वारा विभाजित पैनलों में सरल स्पष्ट छवियों की एक शृंखला में दर्शाया गया है। पेड़ों, फूलों या चट्टानों को सरल आरेखीय रूपों में दर्शाया गया है। आकृतियों को सामने से दिखने वाले परिप्रेक्ष्य में एक मानक लहराती रेखा के समान तैयार किया गया है जो झुके हुए माथे, नाक, होंठ और ठोड़ी को दर्शाते हैं। आँखों को सामान्यतया विशाल दर्शाया गया है।

कुछ रिक्त स्थान अभिव्यक्ति उद्देश्यों के लिए निष्पादित या तैयार किए जाते हैं और रंग को अवास्तविक रूप से नाटकीय प्रभाव पैदा करते हुए दर्शाया जाता है। चित्रों को बहुत आकर्षक

बनाने के लिए रंग और रेखाओं पर प्रभाव दिया जाता है। कृष्ण के शरीर के रंग का नीला, राधा के रूप को नारंगी और गोपी को रूप में पीले रंग का प्रतीकात्मक उपयोग है। ये आकार आदिवासी और लोककला की समानता की अवहेलना करते हुए बहुत सारी प्रवृत्तियों को दिखाती हैं।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. जादूपत किस प्रकार की कला है?
2. यह किस राज्य की तथा किस परंपरा से जुड़ा है?
3. जादूपटुआ कौन हैं?

क्रियाकलाप

आप पुस्तकालय का दौरा करें और जादूपट की जादुई पेंटिंग के बारे में कुछ जानकारी एकत्र करें। अब आप नाटकीय प्रभाव पैदा करते हुए, पेंटिंग में दर्शाए अभिव्यक्ति और रंग के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करें।

.....

.....

.....

1.5 लोक चित्रकला

शिक्षार्थियों, आपने आदिवासी कला के बारे में सीखा है, अब आप मधुबनी लोककला को जानेंगे।

शीर्षक : **मधुबनी पेंटिंग**
राज्य : **बिहार**
प्रकार : **लोककला**
अवधि : **समकालीन**
कलाकार : **अज्ञात**

संक्षिप्त परिचय

यह विश्वास करना काफी तर्कसंगत है कि मनुष्य बचपन से ही रेखाओं और स्ट्रोक की मदद से चित्र बनाने में गहरी दिलचस्पी लेता है। यह प्रारंभिक युग के लोगों के बीच प्रचलित प्रथा रही होगी जिन्होंने प्रकृति और जीवन के माध्यम से अपने अनुभवों और इंद्रियबोध की क्षमता के अनुसार अपने रहने की जगह की दीवारों को चित्रित किया। संपूर्ण मध्य गंगा का मैदान और विशेषकर बिहार इसका अपवाद नहीं है, क्योंकि कई क्षेत्रों की तरह, गहरी जड़ें जमाने वाली पेंटिंग परंपरा के संदर्भ में भी इसका एक अलग स्थान है। अगर आप दुनिया के नक्शे पर नजर डालें तो आपको

उस पर मधुबनी का गाँव नहीं मिलेगा. हालांकि मधुबनी पेंटिंग सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसे मिथिला पेंटिंग के नाम से भी जाना जाता है। इस क्षेत्र के भीतर, एक समृद्ध अनुष्ठान और घरेलू चित्रकला परंपरा बहुत प्रारंभिक काल से जीवित है। मिथिला में चित्रकला की परंपरा का प्रतिनिधित्व महिलाओं के तीन समुदायों- कायस्थ, ब्राह्मण और दुसाध (हरिजन) द्वारा किया जाता है। मिथिला के लोग अत्यधिक धार्मिक हैं, और वे स्वाभाविक रूप से शिव, शक्ति और विष्णु की पूजा से प्रभावित हैं। देवी दुर्गा को 'इष्टदेवी' के रूप में पूजा जाता है। किसी भी मधुबनी पेंटिंग की विषय वस्तु अवसर के आधार पर निश्चित होती है और हर अवसर के लिए एक नई चित्रकला चित्रित की जाती है।

चित्र 1.4: अर्धनारीश्वर, मधुबनी पेंटिंग

सामान्य विवरण

पेंटिंग में आप 'अर्धनारीश्वर की छवि' देखते हैं। आइए अब इस पेंटिंग के बारे में विस्तार से जानते हैं। अलग-अलग रंगों को समेटे हुए आत्मविश्वास से भरी और गहरी रेखाओं के साथ पेंटिंग के विशाल क्षेत्र पर लाल और पीले रंग के मोनोक्रोम वॉश द्वारा अंतरिक्ष को विभाजित किया गया है और इसके लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान की गई है। प्रारंभ में, पारंपरिक विषयों को अनुष्ठान चित्रों

में दोहराया गया था, लेकिन जैसे ही इस तरह के चित्रों की मांग बढ़ी, मिथकों और यहाँ तक कि व्यक्तिगत जीवन सहित अन्य घटनाओं और कहानियों को भी शामिल किया गया। वनस्पति रंगों के स्थान पर सिंथेटिक और कपड़े के रंगों का नियमित उपयोग प्रचलन में आ गया। टहनियों के स्थान पर कलम का प्रयोग ब्रुश के रूप में करना अधिक उपयुक्त पाया गया।

पाठगत प्रश्न 1.4

1. मधुबनी किस प्रकार की कला है?
2. इसका संबंध किस राज्य से है?
3. आम तौर पर लोगों के कौन से समुदाय इस पेंटिंग का प्रतिनिधित्व करते हैं?

आपने क्या सीखा

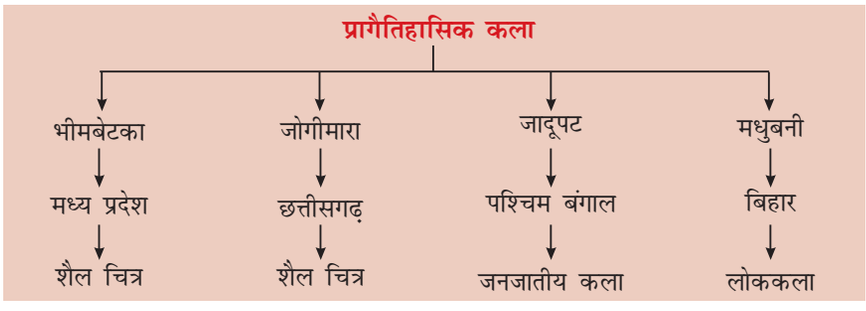

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी

- प्रागैतिहासिक काल से लेकर प्राचीन काल तक की लोक और जनजातीय कला की प्रतीकात्मक विशेषताओं को उनकी अलग-अलग कलाकृति को पहचान कर उनका उपयोग करते हैं।
- किसी भी लोककला को बनाने के लिए विभिन्न शैलियों, सामग्रियों और संरचनाओं का उपयोग करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. शैल पेंटिंग (शैल चित्रण) क्या है? प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला का एक उदाहरण दीजिए और उसका वर्णन कीजिए।
2. फ्रेस्को पेंटिंग क्या है? फ्रेस्को पेंटिंग का एक उदाहरण दीजिए और उसका वर्णन कीजिए।

3. गुफा काल की कला को किन विभागों में विभाजित किया था और क्यों?
4. जनजातीय कला का एक उदाहरण दीजिए और उसकी व्याख्या कीजिए।
5. लोककला का एक उदाहरण दीजिए और उसकी व्याख्या कीजिए।
6. उन देवी-देवताओं के नाम लिखिए जो मधुबनी पेंटिंग से जुड़े हैं?
7. मधुबनी पेंटिंग्स में आजकल आपको कौन से दो प्रमुख बदलाव देखने को मिले हैं? प्रस्तुत कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. (i) शैल पेंटिंग
2. (ii) मध्यप्रदेश

1.2

1. फ्रेस्को पेंटिंग
2. मध्यप्रदेश
3. पहली शताब्दी ईसा पूर्व
4. लाल, काला, सफ़ेद, पीला
5. नीला

1.3

1. जनजातीय कला
2. पश्चिम बंगाल
3. जादूपट पेंटिंग बनाने वाले संथाल

1.4

1. लोककला
2. बिहार
3. कायस्थ, ब्राह्मण और दुसाध

शब्दावली

सिंथेटिक : प्राकृतिक नहीं

जादू : जादू

संथाल : झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के आदिवासी लोग।